धार्यते इति धर्मः

पुर्नयात्रा – ताओ ते चिंग (लाओत्से)

डा0 कल्पना सेंगर

संपादन – नरेंद्र अग्रवाल

प्राक्कथन एवं हिंदी अनुवाद

डा0 हरेन्द्र अग्रवाल

प्रकाशक : बंदना चौधरी

प्रकाशक : बंदना चौधरी, भारत

प्रथम हिन्दी संस्करण– जून 2012

वर्तमान संस्करण: जनवरी 2025

प्रथम तल, सी-6, अंबिका नगर,

शक्तिनत, भरूच, गुजरात (392001)

वेबसाइट: resurrectionofdharma.com,

प्राक्कथन

अपने वर्तमान कार्यों को **प्रदर्शित** करने के लिए भारत में पवित्र ग्रन्थों की बारंबार पुनर्यात्रा करने की परंपरा रहा है। वास्तविकता में भारत में लगभग प्रत्येक काल में लगभग प्रत्येक राजनेता या नेतृत्व ने पवित्र ग्रंथो को अनुसरित किया है और उनपर अपने विचार भी रखे है, जिससे कि उनके कार्य धर्म की सनातन परंपरा के अनुसार रहें।

जब तक कि कोई इन पवित्र ग्रन्थों की पुनर्यात्रा नही कर लेता है तब तक ऐसा समझा जाता है कि वह नेतृत्व अपनी छोटी सी समझ, **दृष्टि**, स्वप्न या समय के दबाव में ही कार्य को **निर्देशित** कर रहा है और उनके प्रभावी लगने पर भी ऐसा लगता है कि यह कदम भाायद धर्म के परीक्षण को पार नही कर पायेंगे और इसलिए लम्बे समय में सभी के लिए आनंद दायक नही होंगा, और इसलिए **शा**यद ऐसा कहा गया कि धर्म ग्रन्थों की यात्रा या पुनर्यात्रा किये बिना व्यक्ति अस्थायी ही बना रहता है।

जब हमने कल्पना बेटी की ताओ ते चिंग पुनर्यात्रा को देखा तो मुझे दो विचार आये– पहला सुखद हास्य का कि पुरानी परम्पराओं को बनाये रखा गया एवं दूसरा कि कैसे एक सामान्य वयक्ति वास्तविक **रूप** से ताओ ते चिंग जैसे महान ग्रन्थ कि पुनर्यात्रा कर सकता है, लेकिन फिर यह अच्छा लगता है कि कल्पना बेटी ने अपने कार्यो को प्रदर्शित करने के लिए धर्म की पराकाश्ठा तक पहुॅचने का ध्यान रखा।

बुद्ध, महाबीर या लाओत्से के धर्मग्रन्थों से **मार्गदर्शन या परामर्श** लेते वक्त यह सामान्य भय रहा है कि कहीं कम समझ के कारण व्यक्ति भगोड़ेपन को प्राप्त न हो जाये, और ऐसे भय के उदाहरण भी है जबकि भारत में अहिंसा के नाम पर भगोड़ेपन को बढ़ावा मिला जबकि समय मॉग करता रहा श्रम, जुझारूपन एवं **संघर्ष** की।

समय आमंत्रण देता है एवं **महापुरुष** आमंत्रित एवं आह्वाहन करते हैं, जब दोनों आमंत्रणा/आह्वाहन का मिलन होता है, रास्ता साफ एवं मंजिल आसान होती है।

क्या कोई सफल हुआ है या क्या कोई सफल हो सकता है यह इतना महत्वपूर्ण नही है जितना कि कार्य के लिए प्रयत्न एवं संघर्श। मैं प्रार्थना करता हूॅ कि कल्पना बेटी धर्म के इन दो आवाहनों को साथ लेकर चलेगी। मैं नहीं कह सकता कि मै लाओत्से के भाब्दो के सही मायने समझता हूॅ लेकिन मै इतना जानता हूॅ कि एक प्रयास हुआ है और इसका स्वागत है।

डा. हरेन्द्र अग्रवाल
दिनांक 26 06 2012
गॉधी मेडीकल कालेज, भोपाल भारत

आमुख

जब हमने महान **लाओत्से की ताओ ते चिंग** अंग्रेजी में पडी तो हमें यह सामान्य रुप से एक महान कृति लगी लेकिन साथ में लगा कि यह महान कृति कही कहीं पलायन की भावना भी **दर्शा** रही है, शुरुवात में हमें लगा कि भाायद यह चाइनीज **भाषा** से अंग्रेजी में हुए अनुवाद के कारण हो लेकिन फिर बहुत सारे अंग्रेजी अनुवादों का अवलोकन करने के बाद हमारी यह भावना मजबूत हुई कि महान लाओत्से की यह कृति पलायन भी **दर्शाती** है।

ताओ ते चिंग महान लाओत्से द्वारा लगभग 2500 **वर्ष** पूर्व लिखी गयी और यह चीन **देश** की सीमा तोडते हूए एक अंतरराश्ट्रीय दृश्टि रखती है। चूँकि लाओत्से की शिक्षायें एवं उनकी ताओ ते चिंग चीन जापान भारत, कोरिया एवं अन्य **देशों** के **शीर्ष एवं शीर्षतम** व्यक्तिओं पर काफी प्रभाव रखती है जो **देशों की दशा एवं दिशा** प्रभावित करते हैं या कर सकते हैं, इसलिए हमें लगा कि ताओ ते चिंग की पुनर्यात्रा कि जरुरत है। हमें लगता है कि यह महात्माओं का **आशीर्वाद** एवं अनगिनत लोगों की **शुभकामनायें** है कि हम सभी की भावनाओं को **धार्यते इति धर्मः (ताओ ते चिंग पुनर्यात्रा)** में समाहित करने का माध्यम बन सके।

धार्यते इति धर्मः (ताओ ते चिंग पुनर्यात्रा) के दौरान हमने मुख्य रुप से ताओ ते चिंग के इंटरनेट में उपलब्धा जिआ फू फेंग एवं जेन इंगलिश, जोन सी एच वू (सम्भाला **प्रकाशन**) एवं डेरेक लिन (रुपा **प्रकाशन**) के अंग्रेजी अनुवादों को सामान्य समझ के लिए पूरी तरह से अवलोकन किया।

इस पुनर्यात्रा में ताओ तें चिंग की तरह ही इक्यासी अध्याय है, सभी अध्याय अपने आपमें पुर्ण हैं लेकिन अपने निकटवर्ती अध्याय से थोडे जुडे हुए भी जिससे धार्यते इति धर्मा में एक पूर्ण रंगचित्र प्रदर्शित होता है।

इसके लेखन में न तो किसी को नाराज करते की ना ही सभी को प्रसन्न करने की कोशिश की गयी है। प्रस्तुति जैसे जैसे वातावरण से लेखन के दौरान आती गयी उसे वैसे ही हम सभी के स्वस्थ्य, सुखद एवं पवित्र जीवन के लिए **प्रेषित** किया है। अंत में मुझे इस बात की अपार खुशी है कि इसका हिन्दी अनुवाद प्राक्कथन के साथ मेरे बड़े पापा डा. हरेन्द्र अग्रवाल ने किया है।

डा. कल्पना सेंगर
दिनांक 28 06 2012

1

पूरी तरह से परिभाष्य ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है,
एक अकेले नाम से सम्बोधित ईश्वर सर्वत्र विद्यमान नहीं है,
प्रारम्भ में नाम नहीं है,
नामकरण धरती और स्वर्ग की शुरुआत है,
नाम असंख्य चीजों के अस्तित्व का बोध है।

देखने में रूप प्रगट होता है,
और नाम लुप्त हो जाता है,
प्रयोग में रूप लुप्त हो जाता है और नाम प्रगट होता है,
रूप और नाम एक हैं लेकिन वर्णन में अलग,
नाम और रूप की एकता माया कही जाती है,
माया की माया सृजन की माया का द्वार है।

***

कीचड़ में कमल खिलता है,
कुरूपता में सौन्दर्य,
कोयले पर हीरे चमकते हैं,
सहजता के आधार पर अच्छाई सुशोभित होती है।

इस तरह वंचित सम्पन्नों को मंच देते हैं,
सुदृढ़ सुरक्षा में आराम पनपता है,
गहरी और मजबूत नींव पर ऊंचाइयां उठती हैं,
निस्तब्धता में संगीत, निर्वात में बर्षा,
परस्पर सम्मान और परस्पर भय में सभ्यतायें उठ खड़ी होती हैं,
इसलिए संत दोनों को लेकर चलते हैं।

निर्वाध जीवन जन्म लेता, बढ़ता और मरता है,
सृजन संधारण और हनन प्रकृति के ही अंग हैं।

***

3

धनधान्य है क्षुधा से निवृत्ति के लिए,
लक्ष्य है हृदय को भ्रम से मुक्ति,
गरिमा है मस्तिष्क के अंधेरे को हटाना,
और कर्तव्य, आलस्य को हटाना।

अनुशासनहीनता हटाने के लिये भय है,
और इसलिये बुद्धिमान सहभागिता से राज्य करते हैं,
मस्तिष्क और हृदय की शुद्धि से,
साथ–साथ श्रम और उत्सव से ।

अगर मनुष्यों के पास हृदय और मस्तिष्क हो,
तो गुरू उन्हें दिशा दे सकते हैं,
कर्म छोड़े नहीं जा सकते,
पूरे करने ही होते हैं,

***

4

धार्यते इति धर्मः,
धर्म सभी कुछ में व्याप्त है, पूर्ण,
पूरी तरह उपयोग के बाद भी पूर्ण,
सारी ही योनियों के लिये ऊर्जा का असीम श्रोत।

प्रत्यन्चा को खींचो, ग्रन्थि को खोलो,
चमक को तेज करो, धूल को उठाओ,
सनातन, प्राप्य और गुप्त,
अनादि और अनंत,
धर्म हर योनि का भार उठाये हुये है।

***

5

सूरज और चाँद भेदभाव से ऊपर हैं,
स्वर्ग और धरती भेदभाव से ऊपर हैं,
वायु और जल भेदभाव से ऊपर है,
उनके लिये सारी चौरासी लाख योनियाँ उनकी अपनी हैं,
संत भेदभाव से ऊपर हैं,
उनके लिये सारे लोग उनके अपने हैं।

आसमान और धरती के बीच में जगह,
काम करने की जगह है,
रूप को बदलने, चलने और मुड़ने की जगह,
वांछित शब्द ज्यादा समझ में आते हैं,
मौन सबसे बेहतर सम्प्रेषण,
अक्षय आधारों को मजबूती से थाम लो।

***

6

आत्मा कभी मरती नहीं,
यह अनादि जीवन आत्मा है।
आत्मा जीवन के त्रि–दर्शन प्रवेश द्वार है,
सृजन, संधारण और हनन,
एक पर्दे की तरह छिपा हुआ।
इसे जिओ, यह कभी समाप्त न होने वाली है।

***

7

आत्मा की मृत्यु क्यों नहीं है ?
यह अजन्मा है इसलिये हमेशा जीवित,
यह अपने आपके लिये नहीं जीती,
इसलिये यह हमेशा जी सकती है।

जब बच्चे खेलते हैं माता–पिता धैर्य का अभ्यास करते हैं,
बच्चे प्रदर्शन करते हैं और माता–पिता के गुण गाते हैं,
बच्चे माता–पिताओं का जीवन बढ़ाते हैं,
इस तरह माता–पिता ज्यादा समय रहते हैं,

संत पीछे रुके रहते हैं और समाज की ओर देखते हैं,
लोग श्रम करते हैं आनंद मनाते हैं और ऋषियों से प्रार्थना करते हैं,
समाज ऋषियों का जीवन बढ़ाता है,
इस तरह ऋषि हमेशा बने रहते हैं।

***

8

श्रेष्ठतम अच्छाई पॉच तत्वों की तरह है,
ये चौरासी लाख योनियों को जीवन देते हैं,
ये ईश्वर की तरह हर ओर व्याप्त हैं।

जीवन में जागरूक हों,
लक्ष्य की ओर निर्देशित हों,
जीवन प्रकृति के पास,
ध्यान में अचेतन के समीप।
व्यवहार में मजबूत और प्राकृतिक,
वाणी में स्पष्ट,
शासन में मूल्यों पर आधारित,
और क्षण–क्षण प्रार्थना, क्रीड़ा और सहभागिता,
एकांत में प्रार्थना,
खिलाड़ी के साथ खेल और सहभागियों के साथ उत्सव।

***

9

अधूरे भरे होने से लबालब होना अच्छा,
मोथरी धार काम नहीं देती,
सम्पत्ति और प्रसन्नता को फैला दो,
तब कोई इसे चुरा नहीं सकता,

सम्पदा और उपाधियों को बांटो, और प्रसन्नता चली आयेगी,
जब थक जायें विश्राम करें, और काम पूरा होने पर मुक्त,
यही स्वर्ग का रास्ता है।

***

10

आत्मा शरीर का आलिंगन करती है और जीवन पैदा हो जाता है,
जीवन के लिये क्या कोई आलिंगन से अलग हो सकता है ?
परिपक्व अवस्था और बुद्धिमान बन जाने पर,
क्या कोई निश्छल रह सकता है ?

आदिम अनुभूति को देखकर भी,
क्या कोई पवित्रता से बच सकता है,
सारे मनुष्यों से प्रेम करते और दुनिया पर शासन करते भी,
क्या कोई चातुर्य को बचा सकता है ?

प्रसन्नता के प्रवेश द्वारों को खोलते बंद करते,
क्या कोई आसक्त रह सकता है?
समझदार और सबके लिये खुला रहकर भी,
क्या कोई निरन्तर अवलोकन से बच सकता है ?

जन्म देते और पोषण देते,
पालते लेकिन अधिकार भाव के बिना,
काम करते लेकिन श्रेय से बचते,
नेतृत्व करते लेकिन आधिपत्य से मुक्त,
बलिदान देते लेकिन आशा के बिना,
प्रेम करते लेकिन फिर भी बिना ठहाकों के,
क्या यह धर्म नहीं है ?

***

तारें पहियों को जोड़ते हैं, चक्र और धुरी से,
धुरी स्थिर है और चक्र घूम सकता है,
वाहन के चलने से ही,
इसकी उपयोगिता एवं उपादेयता होती है।

मिट्टी घड़े को बनाती और स्थान को घेरती है,
इसका आकार और और भीतरी स्थान,
इसकी सुरक्षा और उपयुक्तता तय करते हैं।

कमरे के लिये दरवाजे और खिड़कियां बनाओं,
इसका आकार और भीतरी स्थान,
इसकी सुरक्षा और उपयुक्तता तय करते हैं।

केन्द्र में शेफ्ट और ढांचे में स्टेटर,
जनरेटर या मोटर की क्षमता,
इसके उपयोग और विद्युतीय सीमा तय करते हैं।

जो दिखाई देता है वह रूप है और यह चालित है,
जो नहीं दिखाई देता वह चालक।

***

12

आंखें सात रंग देखती हैं,
कान सात स्वरों को सुनते हैं,
जिव्हा सात स्वादों को ग्रहण करती हैं,
मस्तिष्क सात संवेदनाओं का विश्लेषण, और
हृदय भी सात भावनाओं की अनुभूति करता है,

जबकि इन सबसे मूल्यवान
आत्मा में विस्तीर्ण है।

महान लोग
केन्द्रीय तत्व से संचालित होते हैं, परिधि से नहीं,
ऋषि उसको छोड़ देते हैं और इसको चुन लेते हैं।

***

13

प्रसाद और अप्रसाद को स्वीकृत कर लो,
सौभाग्य और दुर्भाग्य को,
महत्वपूर्ण होने और गैरमहत्वपूर्ण होने को स्वीकृत करो।

प्रसाद और अप्रसाद को स्वीकृत करने का अर्थ क्या है ?
हानि और लाभ की चिन्ता नहीं करना,
यही अर्थ है प्रसाद और अप्रसाद को स्वीकृत करने का।

सौभाग्य और दुर्भाग्य को स्वीकृत करने का अर्थ क्या है ?
सौभाग्य और दुर्भाग्य का तो एक चक्र है,
दुर्भाग्य के बिना सौभाग्य कहां।

महत्वपूर्ण होने और गैरमहत्वपर्णू होने को स्वीकृत करने का,
अर्थ क्या है ?
विजय की आधारशिला होने या ध्वज होने की चिन्ता न करो,
यही अर्थ है महत्वपूर्ण होने और गैरमहत्वपर्णू होने का।

अपने आपको समर्पित करो, और तुम्हारा ध्यान रखा जायेगा,
दुनिया को अपनी ही आत्मा की तरह प्यार करो,
तभी सच्चा प्रेम प्राप्त होगा।

***

14

देखो, इसे देखा नहीं जा सकता,
सुनो, इसे सुना नहीं जा सकता,
सूंघो, इसी सूंघा नहीं जा सकता,
पकड़ो, यह पकड़ में नहीं आता,
यह रूप, ध्वनि, गंध और पकड़ परे है,
ये अपरिभाष्य हैं और एक में जुड़े हुये।

यह एक दिया नहीं है,
ऊपर रोशन और नीचे अंधेरा,
यह शून्यवत है और सब कुछ,
अरूप का रूप,
अछाया की छाया
अपरिभाष्य और अवर्णनीय,
अनादि और अनंत।

इसे देखो, इसे सुनों, इसकी गंध लो, इसका अनुभव करो,
इसे थामों, इसके साथ चलो, इसके साथ ही रहो,
भूत को जानो, भविष्य का ध्यान करो, वर्तमान के साथ चलो,
क्या यही सत्व नहीं ?

***

15

ऋषि सूक्ष्म हैं,
ज्ञानी, बुद्धिमान, संवेदनशील और प्रेमपूर्ण,
उनकी समझ जड़ तक जाती है,
चूंकि यह जड़ तक जाती है, इसलिये यह अवर्णनीय है,
वे साक्षी, जागृत, मित्रतापूर्ण नम्र,
सरल, स्वस्थ, खाली और साफ तथा बहुत कुछ और भी हैं,
वे धैर्य के साथ प्रतीक्षा में,
बच्चों के झगड़ों का सुलझना देख सकते हैं,
युद्ध के बीच भी वे निहत्थे रह सकते हैं।

धर्माचरण पर चलने वाले,
फलों की खोज नहीं करते,
चूंकि वे फल नहीं खोजते,
इसलिये बंधनों से सदा मुक्त रहते हैं।

***

दिमाग को ध्यानपूर्ण बनने दो,
असंख्य चीजें उठती और गिरती हैं,
असंख्य चीजें बढ़ती और पल्लवित होती हैं,
और अपने श्रोत पर वापिस लौटती हैं।

श्रोत से दूर जाना जन्म है,
श्रोत पर वापिस लौटना मृत्यु,
और यही प्रकृति के रास्ते हैं,
स्थिरता, गति प्रदान करती है और गति उर्जा,
स्थिर को जानना अंर्तदृष्टि है और गतिशील को जानना पूर्वदृष्टि,
स्थिर और गतिशील को न जानना भ्रम है,
हृदय और मस्तिष्क दोनों की समझ आनंद।

खुलेपन से ईश्वर की तरह कार्य होता है,
ऐसा करने से प्रभू से एक्य होता है,
ईश्वर से एकत्व सनातन है।

***

17

लोग अपनी इच्छाओं और तृष्णाओं के लिये कार्य करते हैं,
पेट की जरूरत वासना की जरूरत ढॉचे की जरूरत,
लक्ष्य प्राप्त करने की इच्छा या असफलता का भय,
प्रेम को पुष्ट करने की इच्छा, और प्रेम पाने की इच्छा।

लोग हिकारत करने पर बचते हैं,
भय होने पर काम ले लेते हैं,
और जब वे प्रेम करते हैं कार्य को स्वीकृत करते हैं।

भय में किया हुआ कार्य भूल जाना चाहता है,
प्रेम में किये हुये कार्य को अपना मानते और आगे बढ़ाते हैं,
अस्मिता पर सवाल उठने पर जरूरत से ज्यादा कर जाते हैं,

इसलिये ऋषि प्रेम के स्थान लेने, भय के वाष्पीभूत होने और
अस्मिता के बनने की अनुमति देते हैं,
ऋषि अस्मिता को सींचते और प्रेम को फैलाते हैं,
इसलिये वे हमेशा बने रहते है।

***

18

धर्म के विस्मरण पर वाद पैदा होता है,
ऋषियों की उपेक्षा से ब्रह्मचर्य पैदा होता है,
बुजुर्गों और बुद्धिमानों की उपेक्षा से सूचना,
जब स्वास्थ्य भूल जाता है चिकित्सा पैदा होती है,
जब लय टूट जाती है तब योग,
जब नीति की उपेक्षा होती है, भ्रम और अराजकता पैदा होती है,
जब लयबद्धता टूट जाती है, कूटनीति और तुच्छता पैदा होती है,
और पैदा होते हैं समर्पित सेनायें और मंत्री,
अलग–अलग गुणों के आ जाने से,
बड़ी व्यवस्था चली नहीं जाती?

***

संतत्व को छोड़ दो, बुद्धिमत्ता का त्याग कर दो,
और समाज का पतन दूर नहीं है,
दयालुता छोड़ दो, नीति का त्याग कर दो,
और आपसी विश्वास का क्षय दूर नहीं है,
मौलिकता को छोड़ दो, लाभ का त्याग कर दो,
और समुदाय के लिये गुलामी दूर नहीं है।
ये तीन तो सिर्फ बाहरी रूप हैं,
वे अपने आपमें पर्याप्त नहीं।

क्या स्वयं को जानना,
स्वयं के वास्तविक स्वभाव को पहचानना,
जीवन जीने के उद्देश्य को पूरा करना,
ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं?

***

20

ज्ञान का त्याग कर दो,
यह तुम्हारी मुसीबतों की शुरुआत है,
हां और न में फर्क है,
अच्छे और बुरे में फर्क है,
व्यर्थ और सार्थक में फर्क है,
शैतान और संत में फर्क है,
ये अर्थवत्ता की भोली शुरुआतें हैं।
बहुतों के पास आवश्यकता से कम है,
बहुतों के पास जरूरत से बहुत ज्यादा,

बसंत में कुछ लोग कम्बलों में छुप जाते हैं
और देर से उठते हैं,
लेकिन ऋषि जागते हैं, एक नवजात शिशु की तरह,
उन्हें रोना आता है, और आता है
धरती मां के पास रहना।

अरे! लोग समुद्र की लहरों की तरह भटकते हैं,
दिशाहीन जैसे कि बेचैन हवा,
लोग भयभीत हैं,
बलि की दावत के बैल की तरह काम करते,
बहुत से स्पष्ट और तेजस्वी होने का दिखावा करते हैं,
बहुत से कुसाग्र और चतुर होने का दिखावा करते हैं,
दूसरों को बुद्धिहीन और कमजोर मानते,
दूसरों से मतिहीन और मूढ़ों सा बर्ताव करते।
हरेक जरूरतमंद लगता है,

लेकिन कुछ के पास लक्ष्य और आत्मविश्वास है,
ऋषियों को मालूम है कि ऐसे लोग कहां हैं,
वे इन्हें आर्शीवाद देते हैं।

***

21

धर्म का अनुशरण सबसे बड़ा गुण है,
यह गूढ़ है सर्वसमावेशी और इसके भीतर ही दृष्टि है,
यह समाकलित है और इसके भीतर ही रूप है,
यह प्रकाशित है,
और इसके भीतर ही सुगंध और सत्व है।

सुगंध और सत्व वास्तविक हैं,
उनमें आस्था और विश्वास है,
और वहीं सृजन कर्ता, संधारणकर्ता और हननकर्ता की अनुभूति।

***

धर्म को जगह दो और पूर्ण बनों,
झुको और आर्शीवाद प्राप्त करो,
पात्र बनों और भर दिये जाओ,
ऊंचे उड़ो और बादल बन जाओ, बादल और बरसात बनों,
थको और सो जाओ, निवृत्त होकर मर जाओ।

प्रज्ञावान धर्म का आलिंगन करते हैं,
और सबके लिये उदाहरण बन जाते हैं,
वे दिखावा नहीं करते,
उनके कार्य स्वतः चमकते हैं,
वे अपने लिये तर्क नहीं जुटाते,
चूंकि कोई भी दूसरे का निर्णय नहीं कर सकता,
वे कभी झगड़ा नहीं करते,
वे झगड़ों का निपटारा करते हैं।

इसलिये ऋषि कहते हैं,
धर्म को जगह दो और पूर्ण बनों,
प्रकृति के साथ एक बनों,
जरूरी चीजें अपने आप चली आती हैं,
क्या ये केवल शब्द हैं ?

***

निस्तब्धता लम्बी नहीं चलती, और इसी तरह तेज हवा भी,
सूखे के दिन लम्बे नहीं होते, और इसी तरह मूसलाधार बारिश भी,
स्वर्ग और धरती सनातन नहीं हैं,
तो फिर मनुष्य कैसे ?

जो लाभ के पीछे चलता है उसे उसमें हानि मिल सकती है,
जब तुम लाभ और हानि के साथ एक हो,
लाभ और हानि इच्छानुसार अनुभूत होते हैं।

सद्‌गुणी को स्वामित्व प्राप्त होता है,
जब तुम सद्‌गुणों के साथ एक हो,
तो स्वामित्व और अनुशरण करने वाले हमेशा ही हैं।

जो दूसरों पर भरोसा करता है उसे तो धोखा मिलना ही है,
जिसने आस्था को अनुभव किया है, उसे आस्था ही मिलेगी,
जब तुम धर्म के साथ एक हो जाओ,
धर्म हमारी जिम्मेदारियां ले लेता है।

***

जो खड़ा है वह चल भी सकता है,
जो तेज चल सकता है कुलाचें भी भर सकता है,
जो कमा सकता है, दे भी सकता है।

सत्कर्मियों को सम्मान मिलता है,
सफल व्यक्ति बड़े बोल भी बोल सकता है,
जो लगनशील है वह स्वयं की तारीफ भी कर सकता।

अपने पैर पर खड़ा होना,
सत्कर्मी होना, गतिशील होना,
सफलता और अथक लगन प्रसन्नता लाती है,
यही जरूरी भोजन है, यही आवश्यक बोरिया बिस्तर,
बुनियादी जीवन आधार यही हैं,
बुनियादी जीवन आधार अच्छी व्यवस्था बनाये रखते हैं,
इसलिये धर्म को जानने वाला इन्हें साथ रखता है।?

***

25

तुमसे धर्मराज उत्पन्न हुये,
फिर ग्रह नक्षत्रद्ध
उस मौन और सन्नाटे में,
उस तेज शोर और जलाने वाली रोशनी में,
उस सनातन, और स्थिर आकाश में,
धर्मराज ने माया का सृजन किया।

माया का सृजन हुआ, धर्म का जन्म हुआ,
और चौरासी लाख योनियां,
लोग इसे धर्मराज की माया कहते हैं,
लोग इसे महान कहते हैं, यह महान माया चलती है,
लगातार चलने के कारण यह चक्र लेती है,
चक्र लेने के कारण यह वापिस लौटती है,
इसलिये धर्म महान है।

धर्मराज महान है,
ग्रह और नक्षत्र महान है,
स्वर्ग और धरती महान है,
आत्मा महान है, ऋषि महान हैं,
ये ब्रह्मांड की सात महान शक्तियां हैं,
और ऋषि उनमें से एक।

लोग धरती का अनुगमन करते हैं,
धरती सूर्य का, और सूर्य धर्म का,
और धर्म उसका जो प्राकृतिक है।

***

जो हमेशा मुस्कुराते दिखाई देते हैं,
उनके भीतर भारी बेचैनी होती है,
जो जोखिम उठाते दिखाई देते हैं,
अपने साथ भारी सुरक्षा रखते हैं,
जो हल्के प्रतीत होते हैं,
उनके नीचे गहरी नींव होती है।

इसलिये ऋषि दिन–रात काम करते हुये भी,
लोगों पर निगाह रखते हैं,
जब देखने के लिये ज्यादा सुन्दर या कुरूप कुछ नहीं बचता,
ऋषि अनासक्त और चैतन्य बने रहते हैं।

सहस्त्रार के प्रभु, जन में न्याय से काम करते हैं,
धर्म से जुड़े रहना ही निर्भारता है,
ईश्वर के हाथों में होना ही विश्राम है।

***

27

एक महान यात्रा हमेशा ही कहानियां छोड़ जाती है,
एक अच्छा भाषण हमेशा ही प्रतिध्वनि,
एक अच्छा दरवाजा दीवार की तरह ही दिखता है,
अच्छा भोजन करने से दवाइयों की जरूरत नहीं होती,
अच्छे विवाह में कोई गाँठ नहीं होती और न ही अंतिम तिथि,
इसलिये बुद्धिमान लोग, सभी का ध्यान रखते हैं,
और किसी को छोड़ते नहीं,
यही धर्म का अनुगमन है।

एक अच्छा आदमी कौन है ?
बुरे आदमी का एक शिक्षक,
बुरा आदमी कौन है ?
अच्छे आदमी की जिम्मेदारी।

अगर शिक्षक–शिक्षक की तरह व्यवहार नहीं करता,
और छात्रों की देखरेख नहीं होती,
भ्रम पैदा होता है,
चाहे समाज की प्रणाली कितनी ही जटिल क्यों न हो,
ये बुनियादी सिद्धान्त हैं।

***

पुरुषों और महिलाओं की शक्ति को जानें,
पुरुषों और महिलाओं की देखरेख को जानें,
दोनों को जानें, दोनों थामें।

बादल बनें और समुद्र बनें,
जल बनने से सनातन लचीलापन बना रहता है।

कब तक अबोध बने रहोगे, चंचल चपल,
बढ़ो एक पुरुष एक महिला बनों,
सफेद को जानों काले को जानों,
स्वयं के लिये उदाहरण बनों,
हमेशा ही सत्यनिष्ठ हमेशा ही निष्कम्प,
धर्म के साथ एक बनों।

सम्मान को जानों, विनम्रता को जानों,
घाटी बनों और पहाड़ भी बनों,
हमेशा सच्चे और हमेशा सही मार्ग जान लेने वाले,
प्रकृति के साथ एक बनों।

जब पत्थर पर से पर्दा उठ जाता है, यह मूर्ति बन जाता है,
जब लोग प्रार्थना करते हैं, यह ईश्वर हो जाती है,
एक महान शिल्पी एक पत्थर को मूर्ति बनाता है,
और सबसे महान शिल्पी मूर्ति को भगवान।

***

29

क्या तुम सोचते हो, कि दुनिया पर शासन कर,
इसे सुधार दोगे ?
इस माया में, जीवन चलता जाता है, युग बदलते हैं,
लोग बुनियाद भूल जाते हैं, लोग नीति को भूल जाते हैं,
लोग आस्था को भूल जाते हैं, लोग धर्म को भूल जाते हैं,
भ्रम व्यापक हो जाता है, खरपतवार और नागफनियां फैल जाती हैं,

भ्रम को साफ करने ईशा आते हैं, पैगम्बर उठते हैं,
बुद्ध और महावीर खड़े होते हैं,
और धर्म के राज्य को स्थापित करने के लिये,
राम आते हैं और कृष्ण आते हैं।

दुनियां पवित्र है, धर्म पवित्र है,
अगर तुम इसे चलाना चाहो, तुम इसे खो दोगे,
अगर तुम इस पर नियंत्रण करोगे, तो तुम्हीं नष्ट हो जाओगे,
इसके साथ रहो, इसके साथ जियो।

कभी चीजें आगे होती हैं, कभी लोग,
कभी सांस भारी होती है कभी हल्की,
कभी शक्ति होती है और कभी कमजोरी,
कभी–कभी हम ऊपर होते हैं, कभी नीचे,
इसलिये बुद्धिमान अतिरेकों से बचता है।

ऋषि कहते हैं अतिरेक हो जाते हैं, अधिकता हो जाती है
और वह भी बिना बाधा के।

***

30

जब भी आप किसी को सलाह दें,
उसे सलाह दें कि शक्ति केवल अंतिम रास्ता है,
दुनियां जीतने के लिये नहीं है।

जब भी युद्ध होता है खरपतवार, झाड़ियाँ और बंकर उग आते हैं,
बड़े युद्ध की पृष्ठभूमि में लूट और निर्माण होता है,
लूट से निर्माण में रक्त और मांस की गन्ध है,
कभी शक्ति का दुरुपयोग न करें।

शक्ति का उपयोग जरूरी है और उपयोग के बाद की बड़ी जिम्मेदारी,
युद्ध तभी जबकि सारे दूसरे रास्ते असफल हुये,
जो कि धर्म के विरुद्ध जाता है,
अप्राकृतिक अंत को प्राप्त होता है,
यही धर्म का रास्ता है।

सफल हो, प्रसन्नता चली आयेगी,
सफल हो, गरिमा चली आयेगी,
धर्म को थामे रहो श्रेय चला आयेगा,
यही प्राकृतिक तरीका है।

***

31

जो अकेला रह सकता है वह साहसी है,
दूसरो के लिये अच्छे हथियार ज्यादा आत्मविश्वास के औजार हैं,
मध्यम हथियार मध्यम आत्मविश्वास के औजार हैं,
ये भय के औजार हैं,
बुद्धिमान व्यक्ति की उन तक पहुंच होती है,
लेकिन वह शायद ही कभी उनका प्रयोग करता है,
बुद्धिमान व्यक्ति को हथियारों का प्रयोग केवल तब करना चाहिये,
जब उनके पास कोई रास्ता न हो।

युद्धप्रेमी लोगों को छीना झपटी अच्छी लगती है,
युद्धप्रेमी लोग जीत से खुश होते और हत्याओं से प्रसन्न होते हैं,
जो ऐसे हैं, वे कभी तृप्त नहीं होते।

बुद्धिमान व्यक्ति को उदारता रुचिकर है,
युद्ध में जीत से वे कभी खुश नहीं होते,
उनके हृदय को संगीत और लय अच्छी लगती है।

खराब वक्त में प्राथमिकता है दया और सहायता,
अच्छे समय में प्राथमिकता है उदारता,
सेना में जनरल बायीं ओर खड़ा होता है,
और कमांडर इन चीफ दायीं ओर,
शादी में लड़किया बायीं ओर खड़ी होती हैं,
और लड़का दायीं ओर,
युद्ध का संचालन शादी की तरह ही किया जाता है।

प्रेम और युद्ध का उद्देश्य दूसरे को समाप्त करना ही है,
प्रेम और युद्ध का उद्देश्य एक हो जाना ही है,
इसलिये वे कहते हैं प्रेम और युद्ध में कोई नियम नहीं होता,
प्रेम और युद्ध असाधारण घटनायें हैं,
इसीलिये जीत के बाद ऐसे जिया जाना चाहिये,
जैसे विवाह के बाद जीवन।

***

32

धर्म निश्चित है फिर भी अलग–अलग तरह से परिभाषित,
यह सर्वसमावेशी है, लेकिन फिर भी रूप के बिना।

जानना चाहिये कि कब सक्रिय होना है और कब रुकना है,
रुकना सीखने से मुसीबतें दूर रहती हैं,
सक्रिय होना सीखने से हित होता है,
साहसी ही धार्मिक हो सकते हैं,
फिर उन्हें और सलाह की जरूरत नहीं,
सभी चीजें अपना रास्ता ले लेंगी।

जैसे ही हिस्से जोड़ दिये जाते हैं,
एक पूर्णता बनती है जिसका अलग नाम होता है,
सारे नाम एक में समाहित हो जाते हैं,
दुनियां में धर्म दिशा निर्देश भी है और वस्त्रों की तरह भी,
यह हमें सिर से पैर तक बचाता है।

***

33

दूसरों को जानना तो सिर्फ मान्यता है,
स्वयं को जानना बुद्धिमत्ता,
दुसरों को समझना व्यर्थ है,
स्वयं को समझना ज्ञान।

दूसरों की देखरेख के लिये सूचना और धैर्य चाहिये,
खुद की देखरेख के लिये स्पष्टता और शक्ति,
जो अपनी जगह बना रहता है अथक श्रम करता है,
जो जानता है उसके पास काफी है, प्रसन्न है।

निरंतर लगे रहना वर्तमान कमजोरी और भावी शक्ति का संकेत हैं,
निवृत्त हो जाना लेकिन फिर भी थामे रहना,
सनातन उपस्थिति।

***

34

धर्म सर्वसमावेशी है,
एक कोने से दूसरे कोने तक,
सिर से पैर तक,
सारी चीजें इस पर निर्भर हैं।

यह शांति से जीवन उद्देश्य पूरा करता हैं,
और कोई दावा नहीं करता,
यह हरेक चीज का पोषण करता है,
लेकिन इसमें स्वामी होने का कोई भाव नहीं,
हरेक चीज इसी की ओर लौटती है।

यह छोटा नहीं है,
लेकिन बड़े होने का कोई दावा भी नहीं,
यह महत्व नहीं दिखाता,
इसलिये वास्तव में महत्वपूर्ण।

***

35

सारे लोग उसके ही पास आते हैं,
जो धर्म में स्थिर है,
क्योंकि वहीं विश्राम, आनंद और लय है।

धर्म के विवरण, बिना महिमा या अलंकार के हैं,
लेकिन पास से गुजरने वाले को भी,
भोजन और आश्रय मिलता है।

इसे देखा जा सकता है, इसे सुना जा सकता है,
इसका उपयोग और दुरुपयोग हो सकता है,
लेकिन इसको समाप्त नहीं किया जा सकता।

***

ठण्डा किया और ठोस बन गया,
गर्म किया और भाप,
अयस्क को ढाला जा सकता है, और ढाले गये को काटा,

जिन्हें मिलता है वे देना नहीं चाहते,
और जो देते हैं, उन्हें लगता है कि मिल गया,
यही चीजों के स्वभाव की अनुभूति है।

कठोर और मजबूत तेजी से कोमल और मुलायम पर कब्जा कर लेते हैं,
और कमजोर और मुलायम धीरे–धीरे कठोर और मजबूत से जीत,
कमजोरों को बने रहने के लिये जीतने की जरूरत है,
मजबूतों को लगता है कि वे असफल होना सह सकते हैं,
नेताओं को नेतृत्व की जरूरत है अनुगमन की नहीं,
जरूरत से ज्यादा जोखिम महाविनाश लाता है,
देश के हथियारों को पर्दों के भीतर से दिखाया ही जाना चाहिये।

***

37

धर्म, कर्म में निहित है,
वही स्थिरता में भी,
राजा और स्वामियों को इसका पालन करना चाहिये,
तभी चीजें स्वाभाविक रूप से विकसित होंगी।

अगर राजा और स्वामी कर्म के इच्छुक हैं,
तो धर्मानुसार करें,
अगर राजा और स्वामी मौन के इच्छुक हैं,
तो धर्मानुसार ऋषियों के पास बैठे,
भीतर से कोई तृष्णा नहीं,
तृष्णा नहीं तो सब कुछ है,
इस तरह ही लय है,
और हरेक चीज संलग्न।

***

वास्तव में अच्छा आदमी अपनी अच्छाई के प्रति जागृत है,
तभी वह अच्छा है,
एक मूर्ख आदमी अपनी मूर्खता के प्रति जागृत नहीं,
तभी वह मूर्ख है।

एक वास्तव में अच्छा आदमी अपना कर्म करता है,
और परमात्मा पर परिणाम छोड़कर खुश रहता है,
एक मूर्ख आदमी अपना कर्म नहीं करता,
और परिणामों के बारे में हमेशा चिन्तित रहता है।

जब एक वास्तव में दयालु व्यक्ति कुछ करता है,
तो कुछ भी अनकिया न रहने देने की कोशिश करता है,
जब एक न्यायी व्यक्ति कुछ करता है,
तो वह काफी कुछ करने के लिये छोड़ देता है,
जब एक अनुशासक कुछ करता है,
तो अनुशासन ही उसकी मुख्य चिन्ता होती है,
परिणाम है अंहकार की टकराहट और अधूरा काम।

लय खो दो और मशीन बन जाओ,
लय खो जाती है तो मशीनें आ जाती हैं,
जब धर्म खो जाता है, कर्तव्य खो जाता है, तो अच्छाई बचती है,
जब अच्छाई खो जाती है तो दयालुता बचती है,
जब दयालुता खो जाती है तो न्याय बचता है,
जब न्याय खो जाता है तो कर्मकाण्ड बचता है,
कर्मकाण्ड तो विश्वास और स्वामिभक्ति की गंदगी है,
विभेदीकरण और उदासीनता की शुरुआत,
भ्रम और अराजकता की शुरुआत।

भविष्य की ज्योतिष धर्म का एक हिस्सा है,
यह कार्य की शुरुआत है,
इसलिये वास्तव में महान व्यक्ति
को तथ्यों से सरोकार रहता है, लक्ष्यों से,
फूल और फलों से, फलों और बीजों से,
इसलिये वह कर्तव्य को स्वीकृत कर तुच्छता को अस्वीकार करता है।

***

39

ये चीजें पुरातनकाल से एक में से पैदा होती है,
आसमान पूर्ण है, और धरती भी,
सूर्य पूर्ण है और आत्मा शक्तिशाली,
समुद्र पूर्ण है और इसकी रेत भी शक्तिशाली,
ऋषि पूर्ण है और संत शक्तिशाली है,
ये सभी सद्‌गुणी एक से ही आते हैं।

आसमान का खालीपन इसे गिरने से रोकता है,
सूर्य की निरन्तरता ग्रहों को मरने से बचाती है,
आत्मा की शक्ति हमारा जीवन चलाती है,
रेत की रंध्रता पानी को बनाये रखती है,
संतों की तथाता हममें नीति को बनाये रखती है।
ऋषियों का मौन और संतों के कार्य,
मानवता को गिरने से बचाते हैं,
ऋषि और संत जागृत होने से ही हैं,
ज्यादा सफलता और ज्यादा असफलता अच्छे नहीं।

***

40

धर्म की गति सम्पूर्ण है,
धर्म का रास्ता प्राकृतिक,
हरेक योनि का आत्मा से जन्म है,
और आत्मा ब्रह्मा से उत्पन्न।

***

41

ऋषियों का लक्ष्य धर्म है,
बुद्धिमान इसे समझते और लगन से इसका अभ्यास करते हैं,
बौद्धिक इसके बारे में तर्क–वितर्क करते हैं,
और इस पर जब तब विचार करते हैं,
और फिर विलम्बित सम्भ्रांत भी हैं,
जो धर्म के बारे में सुनते और जोर से हंसते हैं।

अगर कोई लक्ष्य कोई समझ न होती,
कोई बहस और कोई हास्य नहीं होता,
तो धर्म वह न होता जैसा कि है।

इसलिये कहा गया,
सीधे रास्ते जल्दी पहुंचते हैं,
बहस से यात्रा लम्बी हो जाती है,
और मजाक करने से फिर से स्थिर होने में समय लगता है।

उच्चतम आर्शीवाद देता लगता है,
बुद्धिमत्ता शुभाकांक्षा,
हास्य प्रयास,
वास्तविक कठोर,
परिपूर्ण दिवास्वप्न,
चौकोर गोल दिखाई देता है,

महान प्रतिभायें वक्त से परिपक्व होती हैं,
मधुरतम स्वर उच्चतम ध्यान मांगते हैं,
महानतम रूप अनंत रूप से लचीला है,
धर्म समावेशी,
केवल धर्म पोषण और संधारण करता है।

***

42

एक से पैदा हुए धर्म ने,
बहुतों को पैदा किया,
चौरासी लाख योनियों को,
हरेक योनि स्त्रियत्व को ले चलती और पुरुषत्व का आलिंगन करती,
और दोनों शक्तियों के मिलन से लय प्राप्त करती।

आम आदमी आम आदमी होने से या सेवक होने से घृणा करता है,
लेकिन इसी तरह वह जन में महान कार्य करता है,
अधिकांश हानि से बचकर बने रहते हैं,
और महान खोकर भी पाते हैं,

वे सत्य कहते हैं,
अधार्मिक अप्राकृतिक मरते हैं,
और धार्मिक प्राकृतिक रूप से,
यही कथन का सार है।

***

सबसे कड़ी चीज सबसे कोमल को सहारा देती है,
सबसे सूक्ष्म चीजें सब पर भारी पड़ती हैं,
आत्मा कहीं भी जगह खोज लेती है,
इस तरह हमें इसका मूल्य ज्ञात होता है,
कार्य द्वारा शिक्षण सबको समझ में आता है।

***

प्रसिद्धि या सम्पदा, ज्यादा अर्थवान क्या है,
सम्पदा या स्वास्थ्य, ज्यादा मूल्यवान क्या है,
स्वास्थ्य या आत्म, ज्यादा वांछित क्या है,

जो गुणों से आसक्त है कष्ट पाता है,
जो आत्म से आसक्त है बिना कष्ट के है,
जो बचाता है उसके कठिन समय में काम आता है,
आत्मनिर्मित मनुष्य कभी दुखी नहीं,
जो जानता है कब रुकना और कब काम करना,
समय में खुद को खोज लेता है और जीवन्त है।

समझने से अतिक्रमण शुरू होता है,
अतिक्रमण से वास्तविक सफलता,
महान सफलता से महान कार्य शुरू होता है,
महान कार्य से सामूहिक प्रगति होती है,
सामूहिक प्रगति से महान देश का निर्माण,
महान देश के निर्माण से दूसरे देशों की प्रगति,
महान राष्ट्रों से सामाजिक विकास शुरू होता है,
इनकी उपयोगिता कम नहीं है।

महान सीधा रास्ता वृत्ताकार है,
महान परिपूर्णता गोलाकार,
महान वक्त्रता स्वयं की तरह मानना,
महान बुद्धिमत्ता सरलता है।

गति से तापमान बढ़ता है,
निस्तब्धता ऊष्मा को संतुलित करती है,
निस्तब्धता और गति माया को जारी रखते हैं।

***

जब धर्म का व्यवहार होता है,
समय भोजन, फैशन, मनोरंजन और प्रकृति में गुजरता है,
जब अधर्म बढ़ता है,
समय, धोखाधड़ी, जलन और साथियों की हत्या में गुजरता है।

अधार्मिक होने से बड़ा पाप नहीं,
दुखी होने से बड़ा अभिशाप नहीं,
बुजुर्गों के सामने जवानों के मरने से बड़ा दुर्भाग्य नहीं,
इसलिये जो यह समझता है,
उसके धार्मिक होने के लिये यह पर्याप्त है।

***

बाहर जाकर,
तुम दुनियां के कई हिस्सों को देख सकते हो,
दूरवीन से देखकर,
तुम एक सितारा देख सकते हो,
लेकिन दूर जाने से,
नजदीकियों से सम्पर्क कम हो जाता है,
और बहुत दूर तुम जाते हो,
तो स्वयं अपने आपसे सम्पर्क भी।

इसलिये ऋषि अपने भीतर देखकर देखते हैं,
अपने भीतर यात्रा कर पहुंचते हैं,
और खुद पर काम करके प्राप्त करते हैं।

***

ज्ञान की खोज में,
दूसरों से मिली सूचनायें इकट्ठा हो जाती हैं,
धर्म की खोज में,
स्वयं का ज्ञान मिलता है,

दूसरों के ज्ञान के आधार पर,
कम से कम किया जाता है,
जब दूसरों के हिसाब से कुछ नहीं किया जाता,
वास्तविक कर्म शुरू होता है।

दूसरों के कहे अनुसार दुनिया पर शासन नहीं हो सकता,
दूसरों के करने से दुनिया पर शासन नहीं हो सकता,
दुनिया पर शासन तो केवल करके ही होता है,
धर्मानुसार।

***

ऋषि के पास स्वयं का मस्तिष्क है और वह जागृत है,
आमतौर पर हम उन लोगों के लिये अच्छे होते हैं,
जो अपने लिये अच्छे हैं,
हम ऐसे लोगों के लिये भी अच्छे हो सकते हैं,
जो देर से अच्छे होने वाले हैं।

महान लोगों को ऐसे लोगों में विश्वास होता है,
जिन्हें अपने ऊपर विश्वास है,
महान लोगों को ऐसे लोगों में भी विश्वास होता है,
जो बुरी ताकतें नहीं हैं।

ऋषि ऋषि है, दुनिया के लिये सम्पूर्ण,
लोग उसकी ओर देखते हैं,
उनकी सुनते हैं और उनका आज्ञा पालन करते हैं।

***

एक तिहाई जीवन के आराधक हैं,
एक तिहाई मृत्यु के,
और एक तिहाई सिर्फ समय गुजारने वाले भी,
ऐसा क्यों है ?

क्योंकि निन्यानबे प्रतिशत तो उथले–उथले ही जीते हैं,
बचे हुये एक प्रतिशत ही खड़े हो सकते हैं,
अपने पैरों पर चल सकते हैं,
और निकटस्थों के प्रियजनों के भय के बिना जी सकते हैं।

बुद्धिमान शब्दों से आहत नहीं होंगे,
क्योंकि भाव उन्हें जड़ नहीं बना सकते,
क्योंकि उनमें प्रणाली के नाखूनों के लिये कोई जगह नहीं,
और उनमें न्याय के घुसने के लिये कोई जगह नहीं,
ऐसा क्यों है ?

क्योंकि ऐसे अपना कफन साथ रखते हैं,
और दूसरे उनके साथ जीते हैं।

***

सब चीजें प्रकृति से आती हैं,
ऊर्जा से बनती हैं,
ऊर्जा की गति से रूप लेती हैं,
और धर्म से घिरी होती है,
इस तरह चौरासी लाख योनियां,
प्रकृति का सम्मान करती हैं और धर्म का पालन,
प्रकृति का सम्मान और धर्म का सम्मान आदेश हैं,
क्योंकि यही वस्तुओं का स्वभाव है।

इस तरह सारी चीजें प्रकृति से आती हैं,
और धर्म बढ़ाता रक्षा करता और प्रेम करता है,
धर्म ही सृजनकर्ता और संधारणकर्ता है,
धर्म ही स्वतंत्रता देता है,
यही स्वप्न और दृष्टि,
यही अंतर्दृष्टि और भविष्यदृष्टि,
यही लोगों को प्रयास कर्म और शोध में लगाता है।

इस तरह धर्म लोगों को विश्वसनीय और दृष्टि सम्पन्न बनाता है,
यह बुनियाद है।

***

सारी चीजों के माता–पिताओं से विश्व का सृजन हुआ,
माता–पिताओं को जानकर हम बच्चों को जानते हैं,
अपने अभिभावकों से अभी भी जुड़े पुत्रों को जानने से,
मौलिकता बनी रहती है।

इच्छाओं से सम्वेदनायें होती हैं,
सम्वेदनाओं से कम्पन,
जब कम्पन हृदय से विलग गुजर जाते हैं,
तो बाईपास शल्य चिकित्सा की जरूरत होती है,
इसलिये महान लोग अपनी
सम्वेदनाओं के प्रतिउत्तर के पूर्व,
सम्वेदनाओं को हृदय से शुद्ध करते हैं,
जब वाणी हृदय से गुजरती है,
तो पवित्र हो जाती है।

शक्ति शक्ति है,
दूर तक देखना अंतर्दृष्टि है,
लक्ष्य के अनुरूप गति भविष्यदृष्टि,
अंतर्दृष्टि रखो भविष्यदृष्टि रखो,
इसी तरह प्रसन्नता सीखी जाती है।

***

केवल शक्तिशाली मुख्य मार्ग पर चलते हैं,
और दूसरे उनसे डरते हैं,
कमजोरों को राजमार्ग पर चलना आसान लगता है,
लेकिन उनके लिये यह पिटने और ठगे जाने का सबसे सरल मार्ग है,
इसलिये राजमार्ग शक्तिशालियों के लिये है,
और जनपथ मातहतों के लिये।

जब गाँव गाँव महिम में प्रकाशित हो,
खेत फलते फूलते हुये,
और गोदाम भरे हुये,
तब कुछ को तीक्ष्ण तलवार उठाना पड़ती है,
और उन्हें सीमाओं पर स्वतंत्रता बनाये रखने के लिये लगाना होता है,
धन सम्पत्ति की रक्षा, न्याय और व्यवस्था की स्थापना,
ताकि लोग खुशी से जी सकें,
ये डकैतों से बचाने वाले, यही जिम्मेदारी समझने वाले हैं।

***

मजबूती से स्थापित लचीली व्यवस्था लम्बी चलती है,
न्यायपूर्ण व्यवस्था लम्बी चलती है,
इन्हें लोग अपना मानते हैं,
इनका लोग सम्मान करते हैं,
शासक इन्हें बनाते हैं,
लोग इनकी हिफाजत करते हैं।

अपने में स्वतंत्रता विकसित करो,
वह वास्तविक होगी,
परिवार को स्वतंत्रता में विकसित करो,
स्वतंत्रता विस्तृत होगी,
शहर में स्वतंत्रता विकसित करो,
स्वतंत्रता बढ़ेगी,
दुनिया में स्वतंत्रता विकसित करो,
यह हर ओर होगी।

इस तरह खुद को खुद की तरह,
परिवार को परिवार की तरह,
शहर को शहर की तरह,
देश को देश की तरह,
और दुनिया को दुनिया की तरह देखो।

हम कैसे जानते है कि दुनिया ऐसी है ?
अपनी आँखें बंद करो और देखो।

***

55

सम्भावनाओं से भरा हुआ नवजात शिशु की तरह,
प्रभु से आर्शीवाद पाता है,
हर समय अभिभावकों से संरक्षित,
मधुमक्खियां और सर्प कहीं ढंक न मार दें,
जंगली जानवर टूट न पड़े,
कीड़े और मक्खियां हमला न कर दें,
उसकी पकड़ मजबूत है लेकिन क्षणभर को,
हड्डियां कोमल, पेशिया कमजोर,
अनुभवहीनता,
वह खुद के खेल में खोया है,
वह रोता खाता और सोता है,
और अपने को साफ करता है,
बढ़ने के लिये यही सर्वोत्तम है।

शरीर की तैयारी वृद्धि है,
चीजों को व्यवस्थित करना विकास,
समय पर ही काम करना बुद्धिमानी है,
सांस पर नियंत्रण भ्रम पैदा करता है,
अगर ऊर्जा का संचार उचित न हो,
तो रूकावट सिकुड़न और जल्दी ही थकान आती है,
जो प्रकृति के विपरीत है, कार्य नहीं करता।

***

केवल वे जो जानते हैं, बात कर सकते हैं,
जो नहीं जानते, केवल बकवास।

मुंह की देखरेख करो, सम्वेदनाओं को तीव्र करो,
संवेदनाओं को तीव्र रखो, समस्याओं का सुलझाओ।
वातावरण से एक बनो।

जिसने इस अवस्था को प्राप्त कर लिया,
उसका सरोकार है,
सहयोगियों से और विरोधियों से,
अच्छाई और बुराई से,
अपमान और सम्मान से,
यही मनुष्य की सही दशा है।

***

देश पर ऐसे शासन करो, जैसे सिर शरीर पर।
देश की वैसे रक्षा करो जैसे प्रतिसंवेदन शरीर की,
धर्म की ओर होकर दुनियां के स्वामी बनो,

हम कैसे जाने कि ऐसा ही है ?
क्योंकि, ज्यादा खाओ या कम,
शरीर कमजोर होता है,
जल्दी खाओ या धीरे,
अपच होती है,

जरूरत से ज्यादा स्वच्छ भोजन या विशेष भोजन,
विचित्र बीमारियां आ ही जाती हैं,
ज्यादा उपवास या ज्यादा नियंत्रण,
शरीर में बेचैनी या आलस्य छा ही जाता है।

ऐसा ही देश भी है,
ज्यादा कानून, ज्यादा नियंत्रण, ज्यादा हथियार,
ज्यादा चालाकी, नियमों और प्रावधानों की बहुतायत,
ये बस नागरिकों के लिये समस्यायें ही समस्यायें है।

इसलिए बुद्धिमान कहते हैं,
उचित आहार लें और शरीर स्वस्थ और सामर्थ्यवान बनता है,
लय बनाये रखें और शरीर लचीला बना रहता है,
शरीर को सुने, हृदय का अनुशरण करे, दिमाग का उपयोग करे,
और सरल और प्रसन्नचित्त जीवन का आनंद लें,
यही देश के संरक्षा, सुरक्षा और सरकार के लिए है।

***

जब देश का जागरूकता से शासन होता है,
लोग सरल रहते हैं,
जब देश का बिना जिम्मेदारी के शासन होता है,
लोग बिना पछतावे के कानून तोड़ते हैं।

दुख से मनुष्य भीतर जाता है,
आनंद से मनुष्य बाहर,
दुख जब आत्मा तक पहुंचा देता है,
तब हृदय में लगातार आनंद होता है,

ऋषि मानवता के लिये कष्ट पाते हैं,
और हमेशा आत्मा से जुड़े रहते हैं,
इसलिये ऋषियों के चरणों के नीचे कार्यरत देश,
चूसता कम है देता ज्यादा।

ऋषियों को मालूम हैं कि भविष्य में क्या छिपा है,
वे जागृत है और सक्रिय, शक्तिशाली और पवित्र,
ऋषियों के शासन में देश में दैवीय अभिजात्य होता है,
और होती है चारों ओर प्रसन्नता।

***

जो दूसरों को शामिल करते है, संचय के अधिकारी हैं,
जो संचय के अधिकारी है, उन्हें कर लेने होगें,
जो कर लेने के अधिकारी है,
उन्हें सुरक्षा और बुनियादी सेवायें देनी होगी,
जो जिम्मेदारी से ऐसा करते हैं वे शासन के लिये योग्य हैं।

जिनकी गहरी जड़ें हैं वे ही ऊपर जा सकते हैं,
जिनकी जितनी गहरी और मजबूत जड़ें,
जिनके जितने लचीले, और मजबूत तनें,
वही मजबूती से और लम्बे समय चल सकते हैं,

ऋषियों की जड़ें धरती माँ के साथ एक हैं,
और उनके तनें पिता आकाश के साथ,
यही शासन का मूल का सिद्धांत है।

***

देश के शासन के बारे में शासक सबसे अच्छा बता सकता है,
शासन चलाना भोजन पकाने जैसा है,
वायरस और बैक्टीरिया से बचाव के लिये,
रसोई में स्वच्छता के लिये,
ठगों और धोखेबाजों को दूर रखने के लिये,
रसोइयों और सहायकों की स्वच्छता बनाये रखें,
भोजन के लिये कच्ची सामग्री का चयन करें,
विधि पूर्वक चीजें मिलायें और उचित पकायें,
भोजन परोसें और पेट भरें,
कपड़े पहने, घूमें और पेट खाली करें,
यह देश के शासन को चलाने के लिये हैं।

***

61

एक महान देश, महान है,
इसमें बरसने को बादल हैं, जमने को पहाड़,
इकट्ठा करने के लिये बादियां, और नदियों के लिये मैदान,
आसमान देखने के लिये रेगिस्तान और वन्य जीवन के लिये वन,
बादल बनने के लिये समुद्र, और दुनियां देखने के लिये महासागर,
पर्यावरण को बनाये रखने के लिये ऋषि।

इसलिये वह देश महान देश बना रहता है,
जहां खोज और साहसिक अभियान चलते हैं,
छोटा देश अगर यह विस्तार नहीं पाता,
तब इसी के लोग इसे तोड़ते हैं,
मछलियों की दुनियां में बड़ी छोटी को खाती है,
और भेड़ियों की दुनियां में एक कई को।

इसलिये ऋषि बनाये रखते हैं,
अपनी सीमायें अपना पर्यावरण,
और दुनियां को एक बड़ा परिवार की तरह देखते हैं।

***

धर्म सब चीजों को आवृत करता है,
यह अच्छे आदमी को आवृत करता है,
यह बुरे को भी आवृत करता है,
बुरा आदमी देर से बनने वाला अच्छा आदमी है,
और अच्छा आदमी देर से बनने वाला संत।

इसलिये जिस दिन नेता को मुकुट पहनाया जाता है,
मंत्रियों और सेनाध्यक्ष की स्थापना होती है,
उन्हें भेंट मत भेजो,
उनको अपनी अपनी निःशुल्क सेवायें प्रस्तुत न करो,
बल्कि प्रभु से प्रार्थना करो,
और उनसे धर्मानुरूप व्यवहार करने का निवेदन करो।

हरेक कोई धर्म को इतना क्यों चाहता है ?
क्योंकि धर्म से ही हर किसी को अपना इष्ट मिलता है,
पाप की क्षमा, और उपलब्धियों पर सराहना।

***

दुनियां में जो कार्य किये जा सकते हैं, वे कठिन नहीं होते,
दुनियां में जो कार्य किये जा सकते हैं, उनमें प्रयास लगता है,
दुनियां में जो कार्य नहीं किये जा सकते, पवित्र होते हैं,
दुनियां में जो कार्य नहीं किये जा सकते, उनके लिये पवित्रता जरूरी।

काम को भारी समझो तो तुम बैठ जाओगे,
जितने को उतना समझो तो तुम चलते रहोगे,
चलते रहने के लिये यह जरूरी है,
जीवन जीने के लिये यह जरूरी है।

कार्यों और गतिविधियों के लिये निरन्तरता जरूरी है,
फल प्रकृति पर छोड़ देने के परिणाम सर्वोत्तम।

महानता प्रकृति प्रदत्त है,
ध्यान से बनी रहने वाली,
न पूरे किये गये वादे तुम्हें इतिहास बना देते हैं,
पूरे किये गये वादे वर्तमान।
इसलिये बुरा बच नहीं सकता,
और ऋषि दावा नहीं करते।

***

छोटे से बीज में विशाल वृक्ष छिपा होता है,
अकेले पेड़ में अनगिनत बीज,
प्रार्थना व्यक्तिगत है, योजना निजी,
पूरे पेड़ की अनुमति के बिना अकेली पत्ती भी नहीं गिरती,
इसलिये उपलब्धि सामूहिक।

छोटी सी चिन्गारी में बड़ी आग छिपी रहती है,
एक अकेली आग में अनगिनत चिन्गारियां,
चिन्गारी गुप्त है, और आग सामूहिक।

कामकाज को देखते लोग अक्सर अंत में चूक जाते हैं,
परिवर्तन की अवस्था में लोग अक्सर,
ठीक उड़ान लेने से पहले चूक जाते हैं,
अवस्था को बदलने में, ठीक उड़ान भरने में,
जड़ता से पार पाने में, छिपे हुये चरित्र से उबरने में,
अतिरिक्त ऊर्जा चाहिये, अतिरिक्त प्रयास चाहिये।

सभी अच्छी चीजों को संरक्षण की जरूरत है,
सभी बुरी चीजों को रोकने की जरूरत है,
शुरुआत में चीजों को तोड़ना आसान है,
शुरुआत में चीजों को बिखेर देना आसान है,
इसलिये बुद्धिमान शुरुआत में ज्यादा सतर्कता रखते हैं,
इसलिये बुद्धिमान अंतिम छोर पर ज्यादा प्रयास करते हैं,

कठिनाई से किये जाने वाले प्रयास का मूल्य समझो,
मुश्किल से मिलने वाली देखभाल का मूल्य समझो,

गुटों से अलग असफल हो जायेगा,
अलग–थलग हो गया हार जायेगा,
इसलिये कर्म को थामों, धर्म को थामों।

इसलिये ऋषि कहते हैं ध्यानपूर्वक हम,
अच्छे का संरक्षण करें, बुद्धिमानी को बढ़ायें,
बचकानेपन को रोकें, बुराई का संहार करें,
प्रयासों को सम्मान करें और समूह को लेकर चलें।

***

65

आस्था और प्रजनन प्रकृति में निहित है,
जो धर्म को जानते हैं,
ताजे और प्रकाशित रहने के लिये इसका व्यवहार करते हैं।

शासन करना इतना कठिन क्यों है ?
क्योंकि लोग और शासक यह भूल जाते हैं, कि
भोला बछड़ा दूध पीता है और
सयाना कौआ गोबर खाता है,
भौतिकवादी नियम को जटिल बना देते हैं,
और विद्रोही तो इसे जलाने का प्रयास करते हैं।

क्योंकि लोग और शासक यह भूल जाते हैं, कि
सामान्यजन स्वार्थ और भय से काम करते हैं, और
बुद्धिमान व्यक्ति आस्था और आपसी भरोसे से कार्य करते हैं।

ये प्राचीनतम गुण हैं, ये गहरे और दूर हैं,
यही सब चीजों को धर्म की ओर ले जाते हैं।

***

धरती के नीचे पानी है,
पानी के नीचे धरती,
समुद्र सारे जल का स्वामी,
बादलों का स्त्रोत,
इसलिये ही नदियां यहां लीन होती है।

जो लोगों को दिशा देते हैं,
उन्हें समुद्र की तरह होना चाहिये,
जो लोगों को नेतृत्व देते हैं,
उन्हें नदियों की तरह होना चाहिये।

जब कोई लोगों के पीछे खड़ा रहता है,
तो खुशी में और विपत्ति में उन्हें अकेला मरने को नहीं छोड़ता,
लोग कृतज्ञ होते हैं, जब कोई इस तरह राज्य करे,
और तब लोग देश की समृद्धि के लिये अपना समय लगाते हैं,
लोग अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये अपनी जान देते हैं।

***

67

सूरज के नीचे हरेक कोई,
कहता है कि उसका धर्म महान है अतुलनीय,
चूंकि ये धर्म महान है, इसलिये वे अलग लगते हैं,
अगर वे अलग न होते तो,
कब के लुप्त हो जाते।

तीन पैमाने हैं, थामने और बनाये रखने योग्य,
स्वतंत्रता पहला है,
बलिदान दूसरा,
और समग्रता तीसरा।

स्वतंत्रता से जिम्मेदारी आती है,
बलिदान से वरिष्ठों की सेवा,
और समग्रता–से अथर्व से,
अर्थव्यवस्था और वातावरण।

मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है और जिम्मेदारी को भूल जाता है,
मनुष्य सहारा चाहता है लेकिन बलिदान को भूल जाता है,
मनुष्य शीर्ष पर रहना चाहता है लेकिन समग्रता का भूल जाता है,
यह तो निश्चित असफलता है,
यह तो धर्म का मार्ग नहीं,
कोई भी धर्म विरुद्ध प्रसन्न नहीं रह सकता,
लम्बा नहीं चल सकता।

***

सैनिक सुरक्षा के लिये हैं,
वे हिंसक नहीं हो सकते,
रक्षार्थ लड़ने वाला योद्धा,
क्रोधित नहीं हो सकता,
प्रगति के लिये पसीना बहाता श्रमिक
प्रतिकारपूर्ण नहीं हो सकता,

नियोक्ता को जिसे बहुत मिलता है,
नम्र ही होना चाहिये।

स्त्रियों के लिये चिन्ता,
शासक के लिये विचार,
दुश्मन के प्रति सम्मान
और रात में चौकन्नापन,
ये सार हैं और इन्हें कर्तव्य की बुनियाद कहा जाता है।
ये लोगों से व्यवहार की बुनियादें कही जाती है,
इन्हें ही अच्छाई के साथ अंतिम एकता कहा जाता है।

***

ऋषि हमेशा ही जजमान होते हैं, विरोधी सेनाओं के लिये भी,
सैनिकों में एक कहावत है हमें मेहमान होना पसन्द है,
सैनिकों में एक कहावत है, हमें हड़पना पसन्द है,

हम गल्ती नहीं करते,
लेकिन जजमान की गल्ती की प्रतीक्षा करते है।
यही बिना हिले गतिशील होना है,
बिना हमले के दुश्मन पकड़ना है,
बिना मालकियत के इलाके पर नियंत्रण है।

दुश्मन को कम करके आंकने से बड़ी विपदा नहीं,
दुश्मन को कम मानकर हम हमेशा अपना ध्यान ही खोते हैं,
स्वयं को कम आंकने से बड़ा कोई सर्वनाश नहीं,
अपनी क्षमता को कम आंककर हम अपनी निष्ठाओं को ही छोड़ देते हैं,

जब एक समान दो सेनायें युद्ध में उलझती हैं,
तो जिस ओर धर्म है वही जीतता है।

***

70

धर्म का समझना सरल है,
धर्म का व्यवहार सरल,
धर्म के शब्द में स्पष्टता है,
धर्म के कार्य में एकजुटता।

चूंकि हममें से अधिकांश उथले हैं,
हमें इसका ज्ञान नहीं मिलता,
इसे जानने वाले विरल हैं,
इसे न जानने वाले बहुत।

इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति
बाजार में भी एकांत और मौन में रहते हैं,
धर्म के पालन के लिये, धर्म को समझने के लिये,
धर्म के अभ्यास के लिये, धर्मानुसार कार्य के लिये।

***

71

जो बीमारी में बीमार होते है,
वे स्वस्थ रहते हैं और इसलिए वे बीमार नहीं,

ज्ञान को जानना मालकियत है,
अज्ञान को जानना बुद्धिमत्ता,
ज्ञान की उपेक्षा बीमारी,
अज्ञान की उपेक्षा उदासीनता।
जीवन्त जीना अलग तरह से जीना है,
उदासीनता से जीना ही मरना है,
ये प्रसन्नता के रहस्य है।

***

जब लोग शक्ति से नहीं डरते,
यह अंतिम समय है जब शासक को आत्मावलोकन कर,
अपने प्रयास संगठित करना चाहिये,
अब भी वह आलोचना को सुनकर सुधर सकता है,
अब भी वह संतो की सुनकर बदल सकता है,
अब भी वह ऋषियों की सुनकर बलिदान दे सकता है।

जब लोगों के घर में घुसपैठ होने लगे,
जब कार्यस्थल पर लोगों को परेशान किया जाये,
जब लोगों के रोजमर्रा के कामों में हस्तक्षेप किया जायेगा,
यह उठ खड़े होने का समय है।

इसलिये वे कहते हैं,
शासक के लिये जरूरी है स्थानीय जीवन और स्थानीयता का ध्यान,
वैश्विक विचार और वैश्विक सरोकार।

***

करूणा के साथ बहादुरी, मारक होती है
बहादुरी के साथ बुद्धिमानी शीतलता देती है
इन दोनो में कौन अच्छा है और कौन नुकसानदेय?

युद्ध में कुछ चीजें अच्छी नहीं,
शान्ति में कुछ चीजें अच्छी नहीं,
युद्ध और शान्ति में स्वर्ग का क्या चुनाव है और क्यों ?
संत भी इस विषय में अनिश्चित हैं।

धर्म दबाव नहीं बनाता फिर भी यह पार पा लेता है,
धर्म बकवास नहीं करता, फिर भी यह उत्तर देता है,
धर्म नहीं मांगता, लेकिन फिर भी लोग इसके लिये जीवन देते हैं,

धर्म कोई लक्ष्य नहीं दिखाता,
लेकिन लोगों को इसमें लक्ष्य दिखाई देता है,
धर्म छानता नहीं है, लेकिन फिर भी इससे कोई चीज नहीं छूटती,
धर्म सर्वसमावेषी है और इसमें जीवन की परिपूर्णता है।

***

अगर जनता लगातार मरने के भय में जी रही है,
अगर नियम तोड़ने का अर्थ मृत्यु है,
तो फिर नियम तोड़ने का दुःसाहस कौन करेगा ?
हत्यारों के वंश इसी नियम पर जिन्दा हैं।

अगर मृत्यु के भय से लगातार पीड़ित बहुत से लोग टूट जाते हैं,
तो फिर वे मृत्यु से नहीं डरते,
क्या तब उन्हें मृत्यु से डराने का कोई अर्थ है ?

दुनियां में एक ही मान्य हन्ता है,
जब ईश्वर एक हाथ से लेता है और दोनों हाथों से देता है,
उसका स्थान लेने का प्रयास करते मनुष्य हत्यारे हो जाते हैं,
तब मनुष्य को ईश्वर का मार्ग समझने की जरूरत है,
अन्यथा उनके ही हाथ में चोट लगेगी।
इसलिये ज्ञानी कहते हैं,
शासन को दमनकर्ता और हत्यारों की भूमिका नहीं लेनी चाहिये।

***

75

लोग भूख से पीड़ित क्यों हैं,
क्योंकि शासक करों में जोड़–तोड़कर पैसा हड़प जाता हैं,
भौतिकवादी शासन में जोड़–तोड़कर पैसा हड़प जाते हैं,
विद्रोही अपने सदस्यों के मस्तिष्क में हेराफेरी कर पैसा हड़प जाता है।

लोग आत्महत्यायें क्यों कर रहे हैं ?
क्योंकि समाज और शासक जीवन से बहुत ज्यादा मांग करते हैं,
क्योंकि जीने के लिये बहुत कम है,
क्योंकि विश्वास के लिये बहुत कम है,
लोगों को जीवन की ज्यादा मूल्य देने की जगह मरना ठीक लगता है।

ऐसे शासक, जिनके अधीन सब ओर आत्महत्यायें हैं,
हटा दिया जाना चाहिये,
शासक जो कि आत्महत्या के प्रकरणों को तंग करते हैं, शैतानी हैं,
इन्हें दंड मिलना चाहिये।

***

एक बच्चा कोमल और कमजोर पैदा होता है,
मनुष्य बढ़कर लचीला और मजबूत हो जाता है,
एक अंकुर कोमल और कमजोर होता है,
पेड़ लचीला और मजबूत हो जाता है,
मृत्यु पर ये कड़े और कमजोर हो जाते हैं।

कड़े और कमजोर तो मृत्यु के शिष्य हैं,
कोमल और कमजोर आशा के,
जबकि लचीले और मजबूत वर्तमान की संतान है,
इस तरह एक सेना जो लचीली और मजबूत है,
ै वहीं जीतेगी, बनी रहेगी,
जीतने और बने रहने के लिये देश को युवा रहना होगा।

***

77

पर्वतों को नदियों को जन्म देना है,
सागरों को बादलों को जन्म देना है,
पर्वतों को नदियों की निरन्तरता बनानी है,
सागरों को बादलों की निरन्तरता बनानी है,
सूर्य ही नदियों और बादलों को मूल श्रोत है।

इसलिये ऋषियों को देखना होगा,
कि शासक जनता की रोजीरोटी बनाये रखे,
कि जनता शासक के करों को बनाये रखें,
धर्म ही सारे खर्चों और करों का श्रोत है।

जैसे जन्म और मृत्यु व्यक्तियों के लिये है,
वैसे ही बनना और मिट जाना देशों के लिये,
उत्थान और पतन समाज के लिये,
वे जो प्रसन्नता पैदा करते हैं और जीवन्त बने रहते हैं।

***

हवा से ज्यादा कोमल और झुकने वाला कोई नहीं,
हवा से ज्यादा जलाने वाला कोई नहीं।

द्रव ठोसों से पार पा सकते हैं,
सूक्ष्म और मुलायम कठोर से,
फिर भी द्रवों के बहने और उनके कार्य के लिये ठोस जरूरी है,
लोग इसे जानते हैं, लेकिन अमल बहुत कम ही करते हैं।

इसलिये ज्ञानी कहते हैं,
जो अपने आप पर कोमल और द्रव का दबाव लेता है,
वही उन्हें सीमित कर सकता है,
जो अपने मातहतों को अपने पुत्र या पुत्री की तरह देखता है,
वही शासक बन सकता है,
सत्य हमेशा सत्य रहता है।

***

एक कड़वी लड़ाई के बाद हिकारत रहनी चाहिये,
क्या यह जरूरी है ?
इसके लिये कोई क्या कर सकता है ?

उदासीनता मरने के समान है,
झगड़ा, लड़ाई की शुरूआत है,
लड़ाई युद्ध की शुरूआत है,
युद्ध समाप्ति की शुरूआत है,
अनिर्णित युद्ध छल कपट और नई सोच की शुरूआत है,

प्रकृति में झगड़ा **हमेशा** चलता रहता है।
प्रकृति बुरे को बरबाद और अच्छाई को आबाद करती है।

***

छोटे देश में कम लोग,
बड़ा देश बहुत लोग,
छोटे देश कम लोग तो बहुत मशीनें,
बड़े देश में बहुत लोग तो कम मशीनें,
देश में नावें, मालवाहक और जहाज जाने के लिये हो,
देश में शस्त्रागार रक्षा के लिए,
सरकारे धन मशीन, बाजार, यौद्धक को ध्यान
दे,
लेकिन आदमी आनंद में नही है क्यों?

मनुष्य जीवन में शांति लय चाहता है क्यों?

मनुष्य अपनी तरह से प्रसन्न होना चाहता है,

मनुष्य अपने पड़ोसी के पास प्रसन्न होता है,

मनुष्य प्रसन्न है प्रसन्नता में रहने से,
और प्रसन्नता में मरने से,
जहॉ मनुष्य स्वास्थ्य, धन, विवाह, बच्चे,
मन्नत मित्र और मृत्यु का ध्यान रखते है,
समाज मजे करता है।

***

सत्य शब्द परीक्षित होते हैं,
सत्य शब्द अनुभव सिद्ध और चखे होते हैं,
सत्य शब्द स्वच्छ होते हैं और हृदय को शुद्ध करते हैं,
सत्य शब्द वास्तव में सुन्दर होते हैं,
सुन्दर शब्द सत्य के बबूले हैं।

ऋषि घोषणा करते हैं,
बुद्धिमान समझते और कहते हैं,
बौद्धिक बहस और दावा करते हैं,
नेता सुनते और नेतृत्व करते हैं,

अनुगामी ग्रहण करते और पीछे चलते हैं,
कुछ पाने के लिये कुछ छोड़ना होता है,
सब कुछ पाने के लिये सबकुछ छोड़ना हैं।

समाज के संस्तर और समाज का स्तर,
छोड़ने पर निर्भर करता है,
छोड़ो, प्रेम करो और जियो,
क्यों, क्या, कहां, कब, कितना और किसे,
धर्म ही निर्देशक है,

***

डा0 कल्पना सेंगर

संपादन – नरेंद्र अग्रवाल

प्राक्कथन एवं **हिंदी** अनुवाद
डा0 हरेन्द्र अग्रवाल